# नंगी आरजू-8

“"कौन सा मेरा सगा भाई या बाप है। कजिन ही तो है ... कजिन लोग क्या चोदते नहीं ... उसे मौका मिलेगा तो वह भी चढ़ने से कौन सा बाज़ आ जायेगा। वैसे भी मैं किसी से नहीं डरती।" ...”

**Story By:** इमरान ओवैश (imranovaish)
**Posted:** Wednesday, November 21st, 2018
**Categories:** जवान लड़की
**Online version:** नंगी आरजू-8


*Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire*

# नंगी आरजू-8

"मुझे सिगरेट की महक बड़ी अच्छी लगती है …. वैसे तुम लोगों ने जो बोतलें किचन के कबाड़ वाले केबिन में छुपाई हैं …. वे भी देखी मैंने। कहो तो ले आऊं …. मेरी वजह से तुम्हारे शौक क्यों मरें। भाई ने बताया था कि रोज रात को पीने की आदत है तुम लोगों को!"
दोनों ने आंखें फैला कर पहले अविश्वास भरे अंदाज में उसे देखा फिर दोनों हाथ उठा कर मेरे कदमों में लोट गये।
"धन्य हो गुरू …. ऐसी मस्त बहन सबको मिले।" दोनों आगे पीछे एक ही बात बोले।
आरजू उठ कर बाहर निकल गयी और अगले दो चक्करों में उसने चखने के साथ पीने का सामान वहीं पंहुचा दिया लेकिन गिलास चार देख कर दोनों भौंचक्के रह गये।

"इतनी हैरानी से क्या देख रहे हो … मैं सिर्फ सोडा ले लूंगी, लेकिन सामने बैठ के पियोगे तो साथ देना बनता है न?" आरजू ने मुस्कराते हुए कहा और दोनों संतुष्ट हो गये।
उसी ने तीन पैग बनाये और खुद सोडा ले लिया। हम तीनों धीरे-धीरे पैग चुसकने लगे।

"वैसे ऐसे कोई कोऑपरेटिव हो तो एतराज की गुंजाइश कहां बचती है।" शिवम ने चुस्की मारते हुए कहा।
"सही बात है।" रोहित ने सर हिलाते हुए उसकी बात का अनुमोदन किया।
"पहले ही बता देना था।" रोहित ने शिकायती नजरों से मुझे देखा।
"मुझे भी कहां पता था भोसड़ी के … यह सब तेवर तो पहली बार देख रहा हूँ।"

“ह … अबे गाली दे रहे हो ?” दोनों ने मुंह फैलाये।

“हां तुम झांट के लौड़ो …. तो शरीफ हो न बड़े … कभी गाली ही नहीं बकते हो।”
“अरे मगर … इनके सामने ?” दोनों उलझन में पड़ गये।
“तो क्या … वह मेरे सामने सिगरेट पी सकती है, शराब की महफिल में साथ दे सकती है तो मैं गाली क्यों नहीं दे सकता ?”
“सही बात है … वैसे भी मैं घर से बाहर निकलने वाली लड़की हूँ, इधर-उधर सुनती ही रहती हूं गाली गलौज, फिर यहां सुन कर क्या फर्क पड़ जायेगा।”

दोनों सर खुजाते कभी मुझे देखते तो कभी आरजू को, जबकि आरजू ने लिकर की बोतल उठाते हुए कहा- खाली सोडा मजा नहीं दे रहा यार … थोड़ी सी तो लेने दो।
“आप भी पीती हो ?” रोहित ने उल्लुओं की तरह पलकें झपकाते हुए पूरे आश्चर्य से कहा।
“कभी कभार … पर बेवड़ी नहीं हूं।”
“जय हो … जय हो।” शिवम ने नारा लगाया।

बहरहाल फिर हम चारों चुपचाप अपने-अपने पैग सिप करने लगे। मैं समझ सकता था कि उनकी मन:स्थिति क्या रही होगी। उनके मन में कई सवाल उभर रहे होंगे जो वे कहने से बच रहे थे लेकिन मुझे पता था कि थोड़ी देर बाद सारी तस्वीर एकदम साफ हो जायेगी।

“मैं चेंज करके आती हूँ।” आरजू अपना पैग खत्म कर के उठती हुई बोली और बाहर निकल गयी।
“साले … तूने बताया नहीं कि तेरी बहन इतनी एडवांस है।” रोहित ने मुझे गाली देते हुए कहा।
“बहन नहीं कजिन भोसड़ी के … और मुझे क्या पहले से पता था। मैं भी उसकी हरकतें अभी ही देख रहा हूँ … पहले घर में तो हमेशा नेक परवीन ही बनी दिखती थी।”

“वैसे तुम लोगों में इस टाईप की लड़कियां होती तो नहीं।” बीच में शिवम ने बोलते हुए कहा।
“हां होती तो नहीं यार … पर यह है तो क्या करूँ।”
“चल अच्छा है … कोई बंदिश तो नहीं महसूस होगी।”
“खत्म हो गया … और बनाऊं ?”
“रहने दे … वही आ के बनायेगी।”

थोड़ी देर में आरजू चेंज कर के आ गयी। सलवार सूट उतार कर उसने ट्राउजर और टीशर्ट पहन ली थी।

यहां गौरतलब बात यह थी कि उसने नीचे ब्रा उतार दी थी जिससे उसके उभार तो चूँकि मामूली ही थे तो वह नहीं पता चल रहे थे लेकिन एक तो पफी निप्पल मोटे और उभरे थे, दूसरे एरोला भी उभरे हुए थे जिसकी वजह से उसके स्तनों का अग्रभाग एकदम साफ ऊपर से ही परिलक्षित हो रहा था।
जाहिर है दोनों कमीनों की निगाहें वहां ठहरनी ही थी। अब मुश्किल यह हो गयी कि मेरे सामने खुल के देख भी नहीं सकते थे तो नजरें बचा-बचा कर देख रहे थे।

“क्या हुआ ख़त्म हो गये सबके … चलो फिर से बनाती हूँ।” उसने ठीये पे बैठते हुए कहा। उसने फिर बाकायदा चार पैग बनाये और हम चारों फिर लगे। वह दोनों कमीने बार-बार नज़र बचा कर उसके चुचुक देखने से बाज़ नहीं आते थे और मैं उन दोनों को ही देख रहा था।

“तुमने कहाँ सीखा पीना ?” फिर मैंने ही बात छेड़ी।
“ब्वायफ्रेंड ने सिखाई … कभी कभार उसी के साथ हो जाती थी।”
“घर कैसे जाती थी फिर नशे में ?”
“कहाँ नशे में … नींबू का इस्तेमाल कर के नशे से छुटकारा पाते थे तब घर जाते थे। बड़ी

आफत थी तब … अब तो खैर कभी भी पी सकते हैं इन पियक्कड़ों के साथ और कहीं घर जाने की टेंशन भी नहीं।"
"बस पीते ही थे या … ?" रोहित ने कहते-कहते जानबूझ कर बात अधूरी छोड़ दी।

"मुझे क्या देख रहा है भोसड़ी के … मैं उसका बाप हूँ, गार्जियन हूँ ? उसकी अपनी लाइफ है, जो उसका जी चाहे करे … मेरी खाला की लड़की है तो जितनी हेल्प मैं कर सकता था उतनी किये दे रहा हूँ, उसका मतलब यह थोड़े है कि वो मेरे हिसाब से चलने लगेगी।"
"सही बात है … चली तो मैं अपने बाप के हिसाब से नहीं।" कह कर वह जोर-जोर से हंसने लगी।

"चढ़ रही है बहन तुझे … पर लिहाज भी तो करना चाहिये न। काफी फर्क है शायद तुम दोनों की उम्र में।" इस बार शिवम ने बुजुर्गों की तरह बात की।
"उम्र का फर्क बचपन में मायने रखता है … फिर बीस के बाद सब बराबर हो जाते हैं।" आरज़ू ने एक बड़ा घूँट लेने के बाद कहा।
"तो बताया नहीं … पीने के बाद चुपचाप घर चले जाते थे ?" रोहित ने फिर छेड़ी।

"तू कुछ और भी तो पूछ सकता है साले … जबरिया गले पड़ रहा है।" शिवम ने ऐसे कहा जैसे उसके पूछने से उलझन हो रही हो जबकि शायद जवाब वह खुद भी सुनना चाहता था।
"पूछने दो यार … मैं क्या किसी से डरती हूँ।" आरज़ू ने ऐसे सीने पे हाथ मार के कहा जैसे नशा चढ़ गया हो।
"तो बताओ न ?"
"अबे चूतिये … तू अपनी गर्लफ्रेंड को अकेले में ला कर दारु पिलाएगा और फिर ऐसे ही घर जाने देगा क्या … पहले यह बता।"
"नहीं … ऐसे कैसे जाने दूंगा।"

“फिर कैसे जाने देगा ?”
“चोदने के बाद जाने दूंगा।” उसने कहा तो आरज़ू से लेकिन डर-डर के देख ऐसे मेरी तरफ रहा था जैसे मेरी लात खाने का डर हो और मैं उठ भी गया।

“बैठ जाओ पहलवान !” आरज़ू ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे खींच कर वापस बिठा लिया और रोहित की तरफ देखते हुए बोली- तो बेटा वो किसी और दुनिया का था क्या जो बिना चोदे मुझे जाने देता।
“अरे क्या बात कर रही यार … यह चोदते कैसे हैं ?” इस बार शिवम ने लहराते हुए स्वर में कहा … लगता था अब माहौल का नशा सर चढ़ने लगा था।
“एल्लो … यह भी न पता।”
“सब पता है मादरचोदों को … हर हफ्ते लौंडिया ला के चोदते हैं यहाँ और मासूम बन रहे हैं साले।”

“अरे तो कोई बात नहीं … फिर भी मैं बता देती हूँ।” आरज़ू ने अपनी टांगें फैलाते हुए कहा- “देख बेटा … यहाँ पे न, लड़की की चूत होती है, जिसमें तुम लौंडे अपना लंड डाल देते हो और उसे इतना अन्दर-बाहर करते हो कि चूत झड़ जाती है और लंड भी झड़ जाता है।”

ज़ाहिर है कि दोनों के कानों की लवें सुलग गयीं और वे मेरी तरफ देखने लगे और मैंने दिखावे के तौर पर अपना सर पीट लिया।

“क्यों टेन्स हो यार … मेरे बाप तो नहीं। जानने दो सबकुछ … की फरक पैंदा ए उस्ताद।” आरज़ू को तो पक्का चढ़ गयी थी और मुझे यह अंदेशा हो गया कि फिर सब सच ही न उगलने बैठ जाये।
“यह झड़ते कैसे हैं यार ?” शिवम ने ही आगे छेड़ा और मैंने उसे लत जड दी, जिससे वह पीछे लुढ़क गया।

थोड़ा बहुत नशा तो सभी को था … शिवम उठा तो गाली देता मेरे ऊपर चढ़ गया और मैंने भी जानबूझ कर उसे पकड़ लिया जैसे छोड़ने का इरादा न रखता होऊं। आरज़ू और रोहित हमें अलग करने की कोशिश करने लगे और इस कोशिश में चारों ही गुत्थमगुत्था हो गये।

जैसा कि मुझे पता था कि इस धींगामुश्ती में मुझे तो गौण ही हो जाना था और वह दोनों आरज़ू के शरीर पर हाथ सेंकने का लुत्फ़ लेने लग जाने वाले थे।
“अरे बहन के लौड़ों … पजामे के ऊपर से उंगली कर रहे हो। पाजामा ही फट जायेगा।”
थोड़ी देर बाद कमरे में आरज़ू की भन्नाई हुई आवाज़ गूंजी।
“हट भोसड़ी के … मेरे सामने उसके उंगली कर रहे हो मादरचोदो!” मैं उनसे अलग होता हुआ चिड़चिड़ाया।

बमुश्किल वह तीनों भी अलग हुए।
“यह बताओ तुम में से मेरी गांड में उंगली किसने की और मेरी चूत में किसने उंगली घुसाई।”
“मैंने नहीं … मैंने नहीं।” दोनों ने स्पष्ट इनकार कर दिया।
“मैं पता लगा के रहूंगी … समझ क्या रखा है तुम लोगों ने मुझे। मौके का फायदा उठाते हो … फिंगर टेस्ट होगा तुम दोनों का।”

“यह कैसा टेस्ट होता है?”
“मेरी गांड में फिर से उंगली घुसाओ … दोनों लोग। मैं जान जाउंगी कि किसने मेरी गांड में उंगली करी थी।” उसने निर्णयात्मक स्वर में कहा और पट्ठे खुश हो गये।

वह उनके सामने चौपाये की तरह झुक गयी और दोनों को उंगली घुसाने को कहा। मैं दोनों टाँगे फैलाये दीवार से टिक के उन्हें देखने लगा। पहले रोहित ने उसके पजामे के ऊपर से ही गुदा द्वार में उंगली घुसाई और फिर उसके निर्देश पर शिवम ने।

“हम्म … तो शिवम तुमने मेरी गांड में उंगली करी थी। तुम्हें इसकी सजा मिलेगी।” कहते हुए वह टाँगें फैला कर सीधे बैठ गयी- अब मेरी चूत में उंगली करो।

अब इससे बढ़िया मौका और कहाँ मिलता … दोनों ने पजामे के ऊपर से ही उसकी योनि में उंगली घुसाई और उसके चेहरे से ही लग रहा था कि वह मज़ा ले रही हो।
“ओह … तो रोहित बाबू …. मेरी चूत में तुमने उंगली करी थी। तुम्हें भी सजा मिलेगी।”
“और वह सजा क्या होगी ?”
“शिवम … तुमने गांड में उंगली की, जो कि ज़ाहिर करता है कि तुम्हे गांड मारने का बहुत शौक है लेकिन मैं तुम्हें गांड नहीं मारने दूँगी और तुम मेरी चूत मरोगे। यही तुम्हारी सजा है … और रोहित तुम … तुमने चूत में उंगली करके साबित किया है कि तुम्हारी प्रियोरिटी चूत है तो तुम्हें चूत मारने को न मिलेगी और तुम्हे मेरी गांड मारनी पड़ेगी।”

दोनों की लार टपक पड़ी लेकिन फिर भी झिझकते हुए दोनों ने मेरी तरफ देखा- हम सजा भुगतने के लिये तैयार हैं लेकिन …
“अरे उसकी तरफ क्यों देख रहे … कौन सा मेरा सगा भाई या बाप है। कजिन ही तो है … कजिन लोग क्या चोदते नहीं … उसे मौका मिलेगा तो वह भी चढ़ने से कौन सा बाज़ आ जायेगा। वैसे भी मैं किसी से नहीं डरती।”
“हमें यकीन है मलिका आलिया !”

“लंड दिखाओ अपने … चेक करुँगी कि कोई बीमारी तो नहीं है।”
अब भला उन्हें कौन सा ऐतराज़ होता … दोनों कमीने मुझे चिढ़ाने वाले अंदाज़ में देखते झटपट नंगे हो गये और उनके झूलते स्थूल लिंग आरज़ू के चेहरे के आगे लहराने लगे। हालाँकि वे नए बने माहौल में उत्तेजित तो हो गये थे लेकिन उनमें पूर्ण तनाव अभी नहीं आया था।

क्रमश:

कहानी पर अपने विचार से मुझे जरूर लिखें ! मेरी मेल आईडी है

imranrocks1984@gmail.com

फेसबुक: https://www.facebook.com/imranovaish2

# Other stories you may be interested in

## मेरी क्लासमेट कॉलगर्ल के रूप में मिली

दोस्तो, मेरा नाम रवीश है, मैं रांची से हूँ. मेरा लंड 6 इंच लंबा और बहुत मोटा है. मुझमें इतना दम है कि मैं एक दिन 6 से 7 बार चोद सकता हूँ. मैंने अपने आस पास की बहुत सी […]
Full Story >>>

## जवान लड़की की चूत चुदाई की शुरुआत-1

मेरा नाम मीता है. मेरी उम्र 24 साल ही है. मुझे सभी लोग खूबसूरत बोलते हैं. मगर मैं ऐसा नहीं सोचती क्योंकि मुझसे अधिक बहुत सी खूसूरत लड़कियां हैं. मैं यह तो नहीं कहूँगी कि मैं लड़के और लड़की के […]
Full Story >>>

## बहन की सास और मेरी माँ से सेक्स

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम रोहित है. मैं 27 साल का हूँ, बेंगलोर में रहता हूँ और यहीं जॉब करता हूँ. मुझे जिम जाने का बहुत शौक है और शारीरिक तंदुरुस्ती के साथ मेरे लंड का साइज भी 7 इंच का […]
Full Story >>>

## तनहा औरत को परम आनन्द दिया-1

दोस्तो, अन्तर्वासना वेब साइट के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार ! मैं बहुत साल से इस वेबसाइट पर से चुदाई की कहानियाँ पढ़ता आया हूँ या यों कहूँ कि बिना चुदाई की कहानिया पढ़े ना तो मेरा दिन पूरा होता है […]
Full Story >>>

## चाची की चूत का दर्द और सिसकारियां

नमस्कार दोस्तो, यह मेरी पहली धमाकेदार सच्ची कहानी है जिसे मैं खुद अगर याद करूं तो लंड फूल जाता है, हाथ खुद व खुद चड्डी में घुस जाता है और पजामा ऊपर सरक जाता है. ज्यादा वक्त खराब न करते […]
Full Story >>>